वैदिक स्वर-प्रक्रिया

सामान्य वैदिक स्वर-प्रक्रिया के अनुसार प्रायः प्रत्येक पद में एक उदात्त स्वर होता है-अनुदात्तं पदमेकवर्ज्यम्। किन्तु इसके दो अपवाद पाये जाते हैं जैसे—कुछ पदों में दो उदात्त अक्षर भी पाये जाते हैं जबकि कुछ पद ऐसे भी होते हैं जिनमें एक भी उदात्त नहीं होता है। सामान्य रूप से एक उदात्त वाले पदों में उदात्त सम्बन्धी नियमों को इस प्रकार देखा जा सकता है—

(१) Dative Infinitive 'तवै' से बने शब्दों में—एतवै में 'ए' और 'वै' दोनों पर उदात्त है।

(२) वे समास से बने शब्द जिनके दोनों पद द्विवचनान्त हों—'मित्रा-वरुणा' (त्रा और व पर) बृहस्पति में (बृ और 'प' पर)।

जिन शब्दों पर उदात्त कभी नहीं होता है, वे हैं—

(१) एन, त्व, सम, मा, त्वा, मे, ते, नौ, वाम्, नः वः, ईम् सीम्।

(२) अव्यय—च, उ, वा, इव, घ, ह, चित्, भल, समहः स्म, स्विद्।

कुछ शब्द वाक्य या पाद में स्थिति के अनुसार उदात्तरहित (unaccented) होते हैं—

(१) सम्बोधन शब्द जब पाद के प्रारम्भ में न हो।

(२) मुख्य वाक्य की क्रिया जब वाक्य या पाद के प्रारम्भ में न हो।

(३) 'अस्य' जब वाक्य या पद के प्रारम्भ में न हो और जोर न देता हो।

(४) यथा जब 'इव' के अर्थ में पाद के अन्त में आवे।

सञ्ज्ञा शब्दों में उदात्त

(१) असन्त संज्ञा शब्द में नपुंसकलिंग होने पर मूलशब्द पर और पुल्लिग होने पर 'प्रत्यय' पर उदात्त होता है। जैसे—अपः (अ पर उदात्त है) कार्य। अपः (प पर) क्रियाशील।

(२) ईष्ठ प्रत्ययान्त में मूलशब्द पर उदात्त होता है। जैसे—यजिष्ठा में य पर। जब पहले कोई उपसर्ग आवे तो उपसर्ग पर उदात्त होता है जैसे—आगमिष्ठ में आ पर।

(३) ईयास् प्रत्ययान्त में मूलशब्द पर जैसे—जवीयांस् में ज पर। उपसर्ग लगने पर उपसर्ग पर उदात्त होता है जैसे—प्रतिच्यवीयांस में प्र पर।

Scanned with CamScanner

(४) 'मनन्त' में नपुंसकलिंग में मूलशब्द पर जैसे—कर्मन् में 'क' पर तथा पुल्लिङ्ग में मन् पर (धर्मन् में 'म' पर) उदात्त होता है।

(५) इनन्त में इन् पर उदात्त होता है जैसे अश्विन् में 'वि' पर।

(६) तमान्त में मूलशब्द पर (अपवाद, पुरुतम, उत्तम, शश्वतम) पर संख्यावाची शब्द के साथ तम लगने पर तम के म पर उदात्त होता है। शततमं।

(७) 'मान्त' शब्दों में म पर उदात्त होता है जैसे—अष्टम।

समासिक पदों में उदात्त

(१) जिसमें एक ही शब्द की आवृत्ति हो उसमें पहले पद पर उदात्त होता है जैसे—अहरहः, द्यविद्यवि।

(२) बहुव्रीहि में प्रथम पद पर उदात्त (बहुव्रीहौ प्रकृत्या पूर्वपदम्) होता है जैसे—धृतव्रताय।

(३) कर्मधारय में उत्तर पद पर, (प्रथमजा) किन्तु जब अन्त में त प्रत्यय से बना पद हो या 'ति' से समाप्त होने वाला शब्द हो तो पहले पद पर उदात्त होगा जैसे—दुहितः, सधस्तुति।

(४) सामान्य तत्पुरुष में अन्तिम पद पर उदात्त होता है जैसे—गोत्रभिद्।

(५) द्वन्द्व समास के उत्तरपद पर उदात्त होता है अहोरात्राणि।

वाक्य में उदात्त

(१) जब सम्बोधन-शब्द वाक्य या पाद के आरम्भ में हो तो उदात्त पहले पर होता है। अन्यथा इस पर उदात्त नहीं होता।

(२) मुख्य क्रिया के अतिरिक्त अन्य क्रियाओं पर उदात्त होता है।

(३) यदि मुख्य क्रिया वाक्य या पाद के प्रारम्भ में आवे तो उस पर उदात्त होता है।

(४) सम्बोधन के तुरन्त बाद क्रिया आवे तो उस पर भी उदात्त होता है। अग्ने जुषस्व।

(५) जब क्रिया बलवती हो तो भी उस पर उदात्त होता है भले वह पाद के प्रारम्भ में न हो। प्रायः बलवती क्रिया से पर इत् या चन् निपात का प्रयोग होता है जैसे—चक्रताद् इत्।

(६) च, चेत्, नेत्, हि, कु, वित् निपातों से युक्त पादों की क्रिया से उदात्त होता है—त्वं हि बलदा असि।

(७) यत् या यत् के किसी रूप से प्रारम्भ होने वाले वाक्य या पाद की क्रिया में उदात्त होता है जैसे—य ईङ्खयन्ति।

उपसर्गों में उदात्त

(१) मुख्य वाक्य में उपसर्ग पर उदात्त होता है।

(२) दो उपसर्ग हों तो दोनों स्वतन्त्र और उदात्तयुक्त होते हैं जैसे—उप प्रयाहि।

(३) आ के पहले कोई उपसर्ग हो तो 'आ' उदात्त होगा समाकृणोषि।

(४) उपवाक्यों में उपसर्ग क्रिया के साथ प्रायः जुड़ा रहता है और उदात्तरहित होता है।

Scanned with CamScanner

पद में दो उदात्त

(१) जिन तत्पुरुष समासों का उत्तरपद पति शब्द होता है उनमें दो उदात्त होते हैं जैसे बृहस्पति।

(२) अलुक् तत्पुरुष में भी दो उदात्त होते हैं जैसे—अपां नपात् या शुनः शेप।

(३) देवताद्वन्द्व समास में दो उदात्त होते हैं जैसे—मित्रावरुणौ, इन्द्राग्नी।

(४) तवै से बने शब्दों में दो उदात्त होते हैं जैसे—एतवै, अन्वेतवे।

(५) असे आदि तुमुन् प्रत्ययार्थ प्रयुक्त चतुर्थी विभक्ति के शब्दों में भी दो उदात्त होते हैं।

सर्वानुदात्त या उदात्त-रहित पद

(१) यद्वृत्त से रहित पाद या वाक्य के मध्य की क्रिया (सम्बोधन से परे न रहने पर तथा बलवती न होने पर) प्रायः उदात्त-रहित अर्थात् सर्वानुदात्त होती है।

(२) पाद या वाक्य के प्रारम्भ में आने वाले सम्बोधन-शब्दों के अतिरिक्त अन्यत्र प्रयुक्त सम्बोधन सर्वानुदात्त होता है।

(३) अस्य और यथा पद भी पाद के प्रारम्भ में न रहने पर सर्वानुदात्त होते हैं।

(४) सर्वनाम शब्दों के वैकल्पिक रूप तथा एन् सम्, वामः आदि तथा समस्त अव्यय अनुदात्त होते हैं।

Scanned with CamScanner